

सुन्दरकाण्ड पाठ की हिंदी में लिरिक्स

Sunderkand Lyrics in Hindi

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ॥

॥ श्रीरामचरितमानस पञ्चम सोपान श्री सुन्दरकाण्ड ॥

॥ श्लोक ॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

॥ चौपाई ॥

जामवंत के बचन सुहाए ।

सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥

तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ।
सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥

जब लगि आवौं सीतहि देखी ।
होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥

यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा ।
चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर ।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥

बार बार रघुबीर सँभारी ।
तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥

जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता ।
चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी ।
तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

॥ दोहा ॥

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥

॥ चौपाई ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा ।
जानै कहूँ बल बुद्धि बिसेषा ॥

सुरसा नाम अहिन्ह कै माता ।
पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥

आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।
सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥

राम काजु करि फिरि मैं आवौं ।
सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥

तब तव बदन पैठिहउँ आई ।
सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥

कबनेहुँ जतन देइ नहिं जाना ।
ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥

जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा ।
कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥

सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ ।
तुरत पवनसुत बतिस भयऊ ॥

जस जस सुरसा बदन बढावा ।
तासु दून कपि रूप देखावा ॥

सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा ।
अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा ।
मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥

मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा ।
बुधि बल मरमु तोर मै पावा ॥

॥ दोहा ॥

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
आसिष देह गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥

॥ चौपाई ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई ।
करि माया नभु के खग गहई ॥

जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं ।
जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥

गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई ।
एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥

सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा ।
तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥

ताहि मारि मारुतसुत बीरा ।
बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥

तहाँ जाइ देखी बन सोभा ।
गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥

नाना तरु फल फूल सुहाए ।
खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥

सैल बिसाल देखि एक आगें ।
ता पर धाइ चढेउ भय त्यागें ॥

उमा न कछु कपि कै अधिकाई ।
प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥

गिरि पर चढि लंका तेहिं देखी ।
कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥

अति उत्तंग जलनिधि चहु पासा ।
कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

॥ छंद ॥

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ॥

चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथिन्ह को गनै ॥
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ॥
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ॥
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ॥
कहुँ महिष मानषु धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ॥
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥

॥ चौपाई ॥

मसक समान रूप कपि धरी ।
लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥

नाम लंकिनी एक निसिचरी ।
सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा ।

मोर अहार जहाँ लगी चोरा ॥

मुठिका एक महा कपि हनी ।

रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥

पुनि संभारि उठि सो लंका ।

जोरि पानि कर बिनय संसका ॥

जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा ।

चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥

बिकल होसि तैं कपि कें मारे ।

तब जानेसु निसिचर संघारे ॥

तात मोर अति पुन्य बहूता ।

देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

॥ दोहा ॥

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।

तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥4॥

॥ चौपाई ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा ।

हृदयँ राखि कौसलपुर राजा ॥

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।

गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥

गरुड़ सुमेरु रेनू सम ताही ।
राम कृपा करि चितवा जाही ॥

अति लघु रूप धरेउ हनुमाना ।
पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा ।
देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥

गयउ दसानन मंदिर माहीं ।
अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥

सयन किए देखा कपि तेही ।
मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा ।
हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरषि कपिराइ ॥

॥ चौपाई ॥

लंका निसिचर निकर निवासा ।
इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥

मन महुँ तरक करै कपि लागा ।
तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा ।
हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥

एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी ।
साधु ते होइ न कारज हानी ॥

बिप्र रुप धरि बचन सुनाए ।
सुनत बिभीषण उठि तहँ आए ॥

करि प्रनाम पूँछी कुसलाई ।
बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥

की तुम्ह हरि दासन्ह महुँ कोई ।
मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥

की तुम्ह रामु दीन अनुरागी ।
आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

॥ दोहा ॥

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।

सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥

तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा ।
करिहहि कृपा भानुकुल नाथा ॥

तामस तनु कछु साधन नाहीं ।
प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥

अब मोहि भा भरोस हनुमंता ।
बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥

जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ।
तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥

सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती ।
करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना ।
कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥

प्रात लेइ जो नाम हमारा ।
तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

अस मैं अधम सखा सुनु मोह पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥

॥ चौपाई ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ।
फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥

एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा ।
पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ॥

पुनि सब कथा बिभीषन कही ।
जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ।
देखी चहउँ जानकी माता ॥

जुगुति बिभीषन सकल सुनाई ।
चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥

करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ।
बन असोक सीता रह जहवाँ ॥

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा ।

बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥

कृस तन सीस जटा एक बेनी ।
जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

॥ दोहा ॥

निज पद नयन दिँ मन राम पद कमल लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई ।
करइ बिचार करौं का भाई ॥

तेहि अवसर रावनु तहँ आवा ।
संग नारि बहु किँ बनावा ॥

बहु बिधि खल सीतहि समुझावा ।
साम दान भय भेद देखावा ॥

कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ।
मंदोदरी आदि सब रानी ॥

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा ।
एक बार बिलोकु मम ओरा ॥

तून धरि ओट कहति बैदेही ।

सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा ।
कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥

अस मन समुझ कहति जानकी ।
खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥

सठ सूने हरि आनेहि मोहि ।
अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥

॥ चौपाई ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना ।
कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥

नाहिं त सपदि मानु मम बानी ।
सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥

स्याम सरोज दाम सम सुंदर ।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥

सो भुज कंठ कि तव असि घोरा ।
सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥

चंद्रहास हरु मम परितापं ।
रघुपति बिरह अनल संजातं ॥

सीतल निसित बहसि बर धारा ।
कह सीता हरु मम दुख भारा ॥

सुनत बचन पुनि मारन धावा ।
मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥

कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई ।
सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥

मास दिवस महुँ कहा न माना ।
तौ मैँ मारबि काढ़ि कृपाना ॥

॥ दोहा ॥

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहि धरहिँ रूप बहु मंद ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका ।
राम चरन रति निपुन बिबेका ॥

सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना ।
सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥

सपनें बानर लंका जारी ।
जातुधान सेना सब मारी ॥

खर आरूढ़ नगन दससीसा ।
मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥

एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई ।
लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥

नगर फिरी रघुबीर दोहाई ।
तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥

यह सपना में कहउँ पुकारी ।
होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥

तासु बचन सुनि ते सब डरीं ।
जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिजटा सन बोली कर जोरी ।
मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥

तजौं देह करु बेगि उपाई ।
दुसहु बिरहु अब नहिं सहि जाई ॥

आनि काठ रचु चिता बनाई ।
मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥

सत्य करहि मम प्रीति सयानी ।
सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि ।
प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥

निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी ।
अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥

कह सीता बिधि भा प्रतिकूला ।
मिलहि न पावक मिटिहि न सूला ॥

देखिअत प्रगट गगन अंगारा ।
अवनि न आवत एकउ तारा ॥

पावकमय ससि स्त्रवत न आगी ।

मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥

सुनहि बिनय मम बिटप असोका ।

सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥

नूतन किसलय अनल समाना ।

देहि अग्नि जनि करहि निदाना ॥

देखि परम बिरहाकुल सीता ।

सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

॥ सोरठाः ॥

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारी तब ।

जनु असोक अंगार दीन्हि हरषि उठि कर गहेउ ॥

॥ चौपाई ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर ।

राम नाम अंकित अति सुंदर ॥

चकित चितव मुदरी पहिचानी ।

हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥

जीति को सकइ अजय रघुराई ।

माया तें असि रचि नहिं जाई ॥

सीता मन बिचार कर नाना ।

मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥

रामचंद्र गुन बरनै लागा ।
सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥

लागीं सुनै श्रवन मन लाई ।
आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई ।
कहि सो प्रगट होति किन भाई ॥

तब हनुमंत निकट चलि गयऊ ।
फिरि बैंठीं मन बिसमय भयऊ ॥

राम दूत मैं मातु जानकी ।
सत्य सपथ करुनानिधान की ॥

यह मुद्रिका मातु मैं आनी ।
दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥

नर बानरहि संग कहु कैसें ।
कहि कथा भइ संगति जैसें ॥

॥ दोहा ॥

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ॥
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥

॥ चौपाई ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी ।
सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥

बूढ़त बिरह जलधि हनुमाना ।
भयउ तात मों कहूँ जलजाना ॥

अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ।
अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥

कोमलचित कृपाल रघुराई ।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥

सहज बानि सेवक सुख दायक ।
कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥

कबहुँ नयन मम सीतल ताता ।
होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥

बचनु न आव नयन भरे बारी ।
अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥

देखि परम बिरहाकुल सीता ।
बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता ।
तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥

जनि जननी मानहु जियँ ऊना ।
तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गद गद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥

॥ चौपाई ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता ।
मो कहूँ सकल भए बिपरीता ॥

नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू ।
कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा ।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥

जे हित रहे करत तेइ पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥

कहेहू तें कछु दुख घटि होई ।
काहि कहौं यह जान न कोई ॥

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा ।
जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं ।
जानु प्रीति रसु एतेनहि माहीं ॥

प्रभु संदेसु सुनत बैदेही ।
मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥

कह कपि हृदयँ धीर धरु माता ।
सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥

उर आनहु रघुपति प्रभुताई ।
सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

॥ दोहा ॥

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥

॥ चौपाई ॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई ।
करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥

रामबान रबि उएँ जानकी ।
तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥

अबहिं मातु मै जाउँ लवाई ।
प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥

कछुक दिवस जननी धरु धीरा ।
कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥

निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं ।
तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥

हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना ।
जातुधान अति भट बलवाना ॥

मोरें हृदय परम संदेहा ।
सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥

कनक भूधराकार सरीरा ।
समर भयंकर अतिबल बीरा ॥

सीता मन भरोस तब भयऊ ।
पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥

॥ चौपाई ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी ।
भगति प्रताप तेज बल सानी ॥

आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना ।
होहु तात बल सील निधाना ॥

अजर अमर गुननिधि सुत होहू ।
करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥

करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना ।
निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥

बार बार नाएसि पद सीसा ।
बोला बचन जोरि कर कीसा ॥

अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ।
आसिष तव अमोघ बिछ्राता ॥

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा ।
लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥

सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी ।
परम सुभट रजनीचर भारी ॥

तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं ।
जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

॥ दोहा ॥

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥

॥ चौपाई ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
फल खाएसि तरु तोरें लागा ॥

रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥

नाथ एक आवा कपि भारी ।
तेहिँ असोक बाटिका उजारी ॥

खाएसि फल अरु बिटप उपारे ।
रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥

सुनि रावन पठए भट नाना ।
तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥

सब रजनीचर कपि संघारे ।
गए पुकारत कछु अधमारे ॥

पुनि पठयउ तेहिँ अच्छकुमारा ।
चला संग लै सुभट अपारा ॥

आवत देखि बिटप गहि तर्जा ।
ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना ।
पठएसि मेघनाद बलवाना ॥

मारसि जनि सुत बांधेसु ताही ।
देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥

चला इंद्रजित अतुलित जोधा ।
बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥

कपि देखा दारुन भट आवा ।
कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥

अति बिसाल तरु एक उपारा ।
बिरथ कीन्ह लंकेस कुमार ॥

रहे महाभट ताके संगी ।
गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगी ॥

तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा ।
भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ।

मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई ।
ताहि एक छन मुरुछा आई ॥

उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया ।
जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म अस्त्र तेहिं साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्मबान कपि कहूँ तेहि मारा ।
परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥

तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ ।
नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥

जासु नाम जपि सुनहु भवानी ।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥

तासु दूत कि बंध तरु आवा ।
प्रभु कारज लागि कपिहिँ बँधावा ॥

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए ।
कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥

दसमुख सभा दीखि कपि जाई ।
कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता ।
भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥

देखि प्रताप न कपि मन संका ।
जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥

॥ चौपाई ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा ।
केहिँ के बल घालेहि बन खीसा ॥

की धौं श्रवन सुनेहि नहिँ मोही ।

देखउँ अति असंक सठ तोही ॥

मारे निसिचर केहिं अपराधा ।
कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥

सुन रावन ब्रह्मांड निकाया ।
पाइ जासु बल बिरचित माया ॥

जाके बल बिरंचि हरि ईसा ।
पालत सृजत हरत दससीसा ॥

जा बल सीस धरत सहसानन ।
अंडकोस समेत गिरि कानन ॥

धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता ।
तुम्ह ते सठन्ह सिखावनु दाता ॥

हर कोदंड कठिन जेहि भंजा ।
तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥

खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली ।
बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

॥ दोहा ॥

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥

॥ चौपाई ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई ।
सहसबाहु सन परी लराई ॥

समर बालि सन करि जसु पावा ।
सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥

खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा ।
कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥

सब कें देह परम प्रिय स्वामी ।
मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे ।
तेहि पर बाँधेउ तनयँ तुम्हारे ॥

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा ।
कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥

बिनती करउँ जोरि कर रावन ।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥

देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी ।
भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥

जाकें डर अति काल डेराई ।
जो सुर असुर चराचर खाई ॥

तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै ।
मोरे कहें जानकी दीजै ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥

॥ चौपाई ॥

राम चरन पंकज उर धरहू ।
लंका अचल राज तुम्ह करहू ॥

रिषि पुलिस्त जसु बिमल मंयका ।
तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥

राम नाम बिनु गिरा न सोहा ।
देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥

बसन हीन नहिं सोह सुरारी ।
सब भूषण भूषित बर नारी ॥

राम बिमुख संपति प्रभुताई ।
जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ।

बरषि गए पुनि तबहिं सुखाहीं ॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी ।
बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥

संकर सहस बिष्नु अज तोही ।
सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

॥ दोहा ॥

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥

॥ चौपाई ॥

जदपि कहि कपि अति हित बानी ।
भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥

बोला बिहसि महा अभिमानी ।
मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥

मृत्यु निकट आई खल तोही ।
लागेसि अधम सिखावन मोही ॥

उलटा होइहि कह हनुमाना ।
मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना ।

बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राणा ॥

सुनत निसाचर मारन धाए ।
सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ॥

नाइ सीस करि बिनय बहूता ।
नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥

आन दंड कछु करिअ गोसाँई ।
सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥

सुनत बिहसि बोला दसकंधर ।
अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥

॥ चौपाई ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि ।
तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥

जिन्ह कै कीन्हसि बहुत बड़ाई ।
देखेउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥

बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ।
भइ सहाय सारद मैं जाना ॥

जातुधान सुनि रावन बचना ।
लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥

रहा न नगर बसन घृत तेला ।
बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥

कौतुक कहँ आए पुरबासी ।
मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥

बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥

पावक जरत देखि हनुमंता ।
भयउ परम लघु रुप तुरंता ॥

निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं ।
भई सभीत निसाचर नारीं ॥

॥ दोहा ॥

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥

॥ चौपाई ॥

देह बिसाल परम हरुआई ।
मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥

जरइ नगर भा लोग बिहाला ।
झपट लपट बहु कोटि कराला ॥

तात मातु हा सुनिअ पुकारा ।
एहि अवसर को हमहि उबारा ॥

हम जो कहा यह कपि नहिं होई ।
बानर रूप धरें सुर कोई ॥

साधु अवग्या कर फलु ऐसा ।
जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥

जारा नगरु निमिष एक माहीं ।
एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥

ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा ।
जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥

उलटि पलटि लंका सब जारी ।
कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

॥ दोहा ॥

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

॥ चौपाई ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा ।
जैसैं रघुनायक मोहि दीन्हा ॥

चूड़ामनि उतारि तब दयऊ ।
हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥

कहेहु तात अस मोर प्रनामा ।
सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥

दीन दयाल बिरिदु संभारी ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

तात सक्रसुत कथा सुनाएहु ।
बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥

मास दिवस महुँ नाथु न आवा ।
तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥

कहु कपि केहि बिधि राखौ प्राणा ।
तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥

तोहि देखि सीतलि भइ छाती ।

पुनि मो कहूँ सोइ दिनु सो राती ॥

॥ दोहा ॥

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥

॥ चौपाई ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी ।
गर्भ स्तवहिं सुनि निसिचर नारी ॥

नाघि सिंधु एहि पारहि आवा ।
सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥

हरषे सब बिलोकि हनुमाना ।
नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥

मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा ।
कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥

मिले सकल अति भए सुखारी ।
तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥

चले हरषि रघुनायक पासा ।
पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥

तब मधुबन भीतर सब आए ।

अंगद संमत मधु फल खाए ॥

रखवारे जब बरजन लागे ।

मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।

सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥

॥ चौपाई ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई ।

मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥

एहि बिधि मन बिचार कर राजा ।

आइ गए कपि सहित समाजा ॥

आइ सबन्हि नावा पद सीसा ।

मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥

पूँछी कुसल कुसल पद देखी ।

राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥

नाथ काजु कीन्हैउ हनुमाना ।

राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥

सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ ।
कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥

राम कपिन्ह जब आवत देखा ।
किँएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥

फटिक सिला बैठे द्वौ भाई ।
परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

॥ दोहा ॥

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥

॥ चौपाई ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया ।
जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥

ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर ।
सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥

सोइ बिजई बिनई गुन सागर ।
तासु सुजसु त्रिलोक उजागर ॥

प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू ।
जन्म हमार सुफल भा आजू ॥

नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी ।
सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥

पवनतनय के चरित सुहाए ।
जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥

सुनत कृपानिधि मन अति भाए ।
पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥

कहहु तात केहि भाँति जानकी ।
रहति करति रच्छा स्वप्न की ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिँ प्रान केहिँ बाट ॥

॥ चौपाई ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही ।
रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥

नाथ जुगल लोचन भरि बारी ।
बचन कहे कछु जनककुमारी ॥

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना ।
दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥

मन क्रम बचन चरन अनुरागी ।
केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥

अवगुन एक मोर मैं माना ।
बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥

नाथ सो नयनन्हि को अपराधा ।
निसरत प्रान करिहिं हठि बाधा ॥

बिरह अगिनि तनु तूल समीरा ।
स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥

नयन स्त्रवहि जलु निज हित लागी ।
जरैं न पाव देह बिरहागी ॥

सीता के अति बिपति बिसाला ।
बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

॥ दोहा ॥

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिय प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना ।
भरि आए जल राजिव नयना ॥

बचन काँय मन मम गति जाही ।
सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरन भजन न होई ॥

केतिक बात प्रभु जातुधान की ।
रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥

सुनु कपि तोहि समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥

प्रति उपकार करौं का तोरा ।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥

सुनु सुत उरिन मैं नाहीं ।
देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥

पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ।
लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

॥ दोहा ॥

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥

॥ चौपाई ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा ।
प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥

प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा ।
सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥

सावधान मन करि पुनि संकर ।
लागे कहन कथा अति सुंदर ॥

कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा ।
कर गहि परम निकट बैठावा ॥

कहु कपि रावन पालित लंका ।
केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥

प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ।
बोला बचन बिगत अभिमाना ॥

साखामृग के बड़ि मनुसाई ।
साखा तें साखा पर जाई ॥

नाघि सिंधु हाटकपुर जारा ।
निसिचर गन बिधि बिपिन उजारा ॥

सो सब तव प्रताप रघुराई ।
नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ॥

॥ दोहा ॥

ता कहूँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकुल ।
तब प्रभावेँ बड़वानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥

॥ चौपाई ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी ।
देहु कृपा करि अनपायनी ॥

सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी ।
एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना ।
ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥

यह संवाद जासु उर आवा ।
रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥

सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा ।
जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥

तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा ।
कहा चलैं कर करहु बनावा ॥

अब बिलंबु केहि कारन कीजे ।
तुरत कपिन्ह कहूँ आयसु दीजे ॥

कौतुक देखि सुमन बहु बरषी ।
नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा ।
गरजहिं भालु महाबल कीसा ॥

देखी राम सकल कपि सेना ।
चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥

राम कृपा बल पाइ कपिंदा ।
भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥

हरषि राम तब कीन्ह पयाना ।
सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥

जासु सकल मंगलमय कीती ।
तासु पयान सगुन यह नीती ॥

प्रभु पयान जाना बैदेहीं ।
फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥

जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई ।
असगुन भयउ रावनहि सोई ॥

चला कटकु को बरनै पारा ।
गर्जहि बानर भालु अपारा ॥

नख आयुध गिरि पादपधारी ।
चले गगन महि इच्छाचारी ॥

केहरिनाद भालु कपि करहीं ।
डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

॥ छंद ॥

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ॥
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ॥
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

॥ दोहा ॥

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥

॥ चौपाई ॥

उहाँ निसाचर रहहिँ ससंका ।
जब ते जारि गयउ कपि लंका ॥

निज निज गृहँ सब करहिँ बिचारा ।
नहिँ निसिचर कुल केर उबारा ॥

जासु दूत बल बरनि न जाई ।
तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥

दूतन्हि सन सुनि पुरजन बानी ।
मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥

रहसि जोरि कर पति पग लागी ।
बोली बचन नीति रस पागी ॥

कंत करष हरि सन परिहरहू ।
मोर कहा अति हित हियँ धरहु ॥

समुझत जासु दूत कइ करनी ।
स्त्रवहीं गर्भ रजनीचर धरनी ॥

तासु नारि निज सचिव बोलाई ।
पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥

तब कुल कमल बिपिन दुखदाई ।
सीता सीत निसा सम आई ॥

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ।
हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।
जब लागि ग्रसत न तब लागि जतनु करहु तजि टेक ॥

॥ चौपाई ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी ।
बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥

सभय सुभाउ नारि कर साचा ।
मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥

जौ आवइ मर्कट कटकाई ।
जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥

कंपहिं लोकप जाकी त्रासा ।
तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई ।
चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥

मंदोदरी हृदयँ कर चिंता ।
भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई ।
सिंधु पार सेना सब आई ॥

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ।
ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥

जितेहु सुरासुर तब श्रम नाही ।
नर बानर केहि लेखे माही ॥

॥ दोहा ॥

सचिव बैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥

॥ चौपाई ॥

सोइ रावन कहूँ बनि सहाई ।
अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥

अवसर जानि बिभीषनु आवा ।
भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥

पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन ।
बोला बचन पाइ अनुसासन ॥

जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता ।
मति अनुरूप कहउँ हित ताता ॥

जो आपन चाहै कल्याना ।
सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥

सो परनारि लिलार गोसाईं ।
तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥

चौदह भुवन एक पति होई ।
भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥

गुन सागर नागर नर जोऊ ।
अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥

॥ चौपाई ॥

तात राम नहिं नर भूपाला ।
भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥

ब्रह्म अनामय अज भगवंता ।
ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥

गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
कृपासिंधु मानुष तनुधारी ॥

जन रंजन भंजन खल ब्राता ।
बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥

ताहि बयरु तजि नाइअ माथा ।
प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥

देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही ।
भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥

सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा ।
बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥

जासु नाम त्रय ताप नसावन ।
सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

॥ दोहा ॥

बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥

॥ चौपाई ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना ।
तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥

तात अनुज तव नीति बिभूषन ।
सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥

रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ ।
दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥

माल्यवंत गृह गयउ बहोरी ।
कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥

तव उर कुमति बसी बिपरीता ।
हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥

कालराति निसिचर कुल केरी ।
तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
सीत देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥

॥ चौपाई ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी ।
कही बिभीषन नीति बखानी ॥

सुनत दसानन उठा रिसाई ।
खल तोहि निकट मुत्यु अब आई ॥

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा ।
रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥

कहसि न खल अस को जग माहीं ।
भुज बल जाहि जिता मैं नाही ॥

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती ।
सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥

अस कहि कीन्हसि चरन प्रहारा ।

अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥

उमा संत कइ इहइ बड़ाई ।
मंद करत जो करइ भलाई ॥

तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा ।
रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥

सचिव संग लैनभ पथ गयऊ ।
सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

॥ दोहा ॥

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मै रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं ।
आयूहीन भए सब तबहीं ॥

साधु अवग्या तुरत भवानी ।
कर कल्यान अखिल कै हानी ॥

रावन जबहिं बिभीषन त्यागा ।
भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥

चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं ।

करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥

देखिहउँ जाइ चरन जलजाता ।

अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥

जे पद परसि तरी रिषिनारी ।

दंडक कानन पावनकारी ॥

जे पद जनकसुताँ उर लाए ।

कपट कुरंग संग धर धाए ॥

हर उर सर सरोज पद जेई ।

अहोभाग्य मै देखिहउँ तेई ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।

ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥

॥ चौपाई ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा ।

आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥

कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा ।

जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥

ताहि राखि कपीस पहिँ आए ।
समाचार सब ताहि सुनाए ॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ।
आवा मिलन दसानन भाई ॥

कह प्रभु सखा बूझिए काहा ।
कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥

जानि न जाइ निसाचर माया ।
कामरूप केहि कारन आया ॥

भेद हमार लेन सठ आवा ।
राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी ।
मम पन सरनागत भयहारी ॥

सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना ।
सरनागत बच्छल भगवाना ॥

॥ दोहा ॥

सरनागत कहूँ जे तजहिँ निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥

॥ चौपाई ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू ।
आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥

सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं ।
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥

पापवंत कर सहज सुभाऊ ।
भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥

जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई ।
मोरें सनमुख आव कि सोई ॥

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥

भेद लेन पठवा दससीसा ।
तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥

जग महुँ सखा निसाचर जेते ।
लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥

जौं सभीत आवा सरनाई ।
रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥

॥ दोहा ॥

उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि चले अंगद हनू समेत ॥

॥ चौपाई ॥

सादर तेहि आगें करि बानर ।
चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥

दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता ।
नयनानंद दान के दाता ॥

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी ।
रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥

भुज प्रलंब कंजारुन लोचन ।
स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥

सिंघ कंध आयत उर सोहा ।
आनन अमित मदन मन मोहा ॥

नयन नीर पुलकित अति गाता ।
मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥

नाथ दसानन कर मैं भ्राता ।
निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥

सहज पापप्रिय तामस देहा ।

जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

॥ दोहा ॥

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि करत दंडवत देखा ।
तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥

दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा ।
भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥

अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ।
बोले बचन भगत भयहारी ॥

कहु लंकेस सहित परिवारा ।
कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥

खल मंडलीं बसहु दिनु राती ।
सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥

मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती ।
अति नय निपुन न भाव अनीती ॥

बरु भल बास नरक कर ताता ।

दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥

अब पद देखि कुसल रघुराया ।

जौं तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

तब लागि कुसल न जीव कहूँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।

जब लागि भजत न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥

॥ चौपाई ॥

तब लागि हृदयँ बसत खल नाना ।

लोभ मोह मच्छर मद माना ॥

जब लागि उर न बसत रघुनाथा ।

धरें चाप सायक कटि भाथा ॥

ममता तरुन तमी अँधिआरी ।

राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥

तब लागि बसति जीव मन माहीं ।

जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥

अब मैं कुसल मिटे भय भारे ।

देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥

तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला ।
ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ ।
सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥

जासु रूप मुनि ध्यान न आवा ।
तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥

॥ दोहा ॥

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिब सेव्य जुगल पद कंज ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ ।
जान भुसुंड़ि संभु गिरिजाऊ ॥

जौं नर होइ चराचर द्रोही ।
आवे सभय सरन तकि मोही ॥

तजि मद मोह कपट छल नाना ।
करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥

जननी जनक बंधु सुत दारा ।
तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥

सब कै ममता ताग बटोरी ।
मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥

समदरसी इच्छा कछु नाहीं ।
हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥

अस सज्जन मम उर बस कैसें ।
लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें ।
धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह केँ द्विज पद प्रेम ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें ।
तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥

राम बचन सुनि बानर जूथा ।
सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥

सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी ।
नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥

पद अंबुज गहि बारहिं बारा ।
हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥

सुनहु देव सचराचर स्वामी ।
प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रही ।
प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥

अब कृपाल निज भगति पावनी ।
देहु सदा सिव मन भावनी ॥

एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा ।
मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं ।
मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥

अस कहि राम तिलक तेहि सारा ।
सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

॥ दोहा ॥

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेहु राजु अखंड ॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिऐँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥

॥ चौपाई ॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना ।
ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥

निज जन जानि ताहि अपनावा ।
प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥

पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी ।
सर्वरूप सब रहित उदासी ॥

बोले बचन नीति प्रतिपालक ।
कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥

सुनु कपीस लंकापति बीरा ।
केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥

संकुल मकर उरग झष जाती ।
अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥

कह लंकेस सुनहु रघुनायक ।
कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥

जद्यपि तदपि नीति असि गाई ।
बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥

॥ चौपाई ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई ।
करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥

मंत्र न यह लछिमन मन भावा ।
राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥

नाथ दैव कर कवन भरोसा ।
सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥

कादर मन कहूँ एक अधारा ।
दैव दैव आलसी पुकारा ॥

सुनत बिहसि बोले रघुबीरा ।
ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥

अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई ।
सिंधु समीप गए रघुराई ॥

प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई ।
बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥

जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए ।
पाछें रावन दूत पठाए ॥

॥ दोहा ॥

सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥

॥ चौपाई ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ ।
अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥

रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने ।
सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥

कह सुग्रीव सुनहु सब बानर ।
अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥

सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए ।
बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥

बहु प्रकार मारन कपि लागे ।
दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥

जो हमार हर नासा काना ।
तेहि कोसलाधीस कै आना ॥

सुनि लछिमन सब निकट बोलाए ।
दया लागि हँसि तुरत छोडाए ॥

रावन कर दीजहु यह पाती ।
लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।
सीता देइ मिलेहु न त आवा काल तुम्हार ॥

॥ चौपाई ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा ।
चले दूत बरनत गुन गाथा ॥

कहत राम जसु लंकाँ आए ।
रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥

बिहसि दसानन पूँछी बाता ।
कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥

पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी ।

जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥

करत राज लंका सठ त्यागी ।
होइहि जब कर कीट अभागी ॥

पुनि कहु भालु कीस कटकाई ।
कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥

जिन्ह के जीवन कर रखवारा ।
भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥

कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी ।
जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

॥ दोहा ॥

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥

॥ चौपाई ॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें ।
मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥

मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा ।
जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥

रावन दूत हमहि सुनि काना ।

कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥

श्रवन नासिका काटै लागे ।

राम सपथ दीन्हे हम त्यागे ॥

पूँछिहु नाथ राम कटकाई ।

बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥

नाना बरन भालु कपि धारी ।

बिकटानन बिसाल भयकारी ॥

जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा ।

सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥

अमित नाम भट कठिन कराला ।

अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।

दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥

॥ चौपाई ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना ।

इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥

राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं ।
तृन समान त्रेलोकहि गनहीं ॥

अस मैं सुना श्रवन दसकंधर ।
पदुम अठारह जूथप बंदर ॥

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं ।
जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा ।
आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥

सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला ।
पूरहीं न त भरि कुधर बिसाला ॥

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा ।
ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥

गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका ।
मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

॥ दोहा ॥

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहु जीति सकहिं संग्राम ॥

॥ चौपाई ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई ।
तब भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥

तासु बचन सुनि सागर पाहीं ।
मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥

सुनत बचन बिहसा दससीसा ।
जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥

सहज भीरु कर बचन दढ़ाई ।
सागर सन ठानी मचलाई ॥

मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ।
रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥

सचिव सभीत बिभीषन जाकें ।
बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ॥

सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी ।
समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥

रामानुज दीन्ही यह पाती ।
नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥

बिहसि बाम कर लीन्ही रावन ।
सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्णु अज ईस ॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥

॥ चौपाई ॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई ।
कहत दसानन सबहि सुनाई ॥

भूमि परा कर गहत अकासा ।
लघु तापस कर बाग बिलासा ॥

कह सुक नाथ सत्य सब बानी ।
समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥

सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा ।
नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥

अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ।
जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥

मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही ।
उर अपराध न एकउ धरिही ॥

जनकसुता रघुनाथहि दीजे ।
एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥

जब तेहिं कहा देन बैदेही ।
चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥

नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ ।
कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥

करि प्रनामु निज कथा सुनाई ।
राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥

रिषि अगस्ति कीं साप भवानी ।
राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥

बंदि राम पद बारहिं बारा ।
मुनि निज आश्रम कहूँ पगु धारा ॥

॥ दोहा ॥

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥

॥ चौपाई ॥

लछिमन बान सरासन आनू ।
सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ।
सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥

ममता रत सन ग्यान कहानी ।
अति लोभी सन बिरति बखानी ॥

क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा ।
ऊसर बीज बँ फल जथा ॥

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ।
यह मत लछिमन के मन भावा ॥

संघानेउ प्रभु बिसिख कराला ।
उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥

मकर उरग झष गन अकुलाने ।
जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥

कनक थार भरि मनि गन नाना ।
बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥

॥ चौपाई ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ।
छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥

गगन समीर अनल जल धरनी ।
इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥

तव प्रेरित मायाँ उपजाए ।
सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥

प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई ।
सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ॥

प्रभु भल कीन्ही मोहि सिख दीन्ही ।
मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी ।
सकल ताड़ना के अधिकारी ॥

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ।
उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥

प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई ।
करौं सो बेगि जौ तुम्हहि सोहाई ॥

॥ दोहा ॥

सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥

॥ चौपाई ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई ।
लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥

तिन्ह के परस किँ गिरि भारे ।
तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥

मैं पुनि उर धरि प्रभुताई ।
करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥

एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ ।
जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥

एहि सर मम उत्तर तट बासी ।
हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥

सुनि कृपाल सागर मन पीरा ।
तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥

देखि राम बल पौरुष भारी ।
हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥

सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ।

चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

॥ छंद ॥

निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ॥
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

॥ दोहा ॥

Sunderkand Lyrics in Hindi

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥

॥ मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम ॥

॥ इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने पञ्चमः सोपानः समाप्तः ॥

॥ श्री रामचरितमानस का यह पंचम सोपान समाप्त हुआ ॥

जय सियाराम जय जय सियाराम ॥
जय सियाराम जय जय सियाराम ॥